Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

विद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

Vinita Kumari[1]* Dr. Ramesh Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

[2] Director, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

सार - शिक्षा के स्वरूप में माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। माध्यमिक शिक्षा समूची शिक्षा प्रणाली की रीढ की हड्डी के समान है। माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र के तकनीकी तथा सांस्कतिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालती है। यह शिक्षा उन नवयुवकों को शिक्षित करती है जो देश के समाजिक निर्माण तथा आर्थिक विकास में प्रभावशाली हो सके। ऐसी स्थिति में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की भूमिका के निर्वाह की अनिवार्यता स्वतः ही सुस्पष्ट हो जाती है। अध्यापकों की भूमिका निर्वाह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनके अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति पर निर्भर करता है। प्रस्तुत शोधपत्र ''डबरा जिले के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन;'' प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें सर्वेक्षण विधि द्वारा डॉ. एस. पी. आहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति परिसूची (टी.ए.आई.) प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। शोध में माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत सरकारी व निजी विद्यालयों के 100 ***शिक्षकों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र डबरा जिले के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन एवं इसमें वांछनीय सुधारात्मक उपायों पर विचार करने का एक प्रयास है।***

विशिष्ट शब्दः माध्यमिक शिक्षा, अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति, सरकारी व निजी विद्यालय।

---------------------------------X---------------------------------

प्रस्तावना

आधुनिक जगत में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेरबदल हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय तथा मनोसामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछूता नहीं है, परन्तु प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृत्ति से समृद्ध थी जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य मात्र का सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता से संचालित होता था। इसके साथ-साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक ढ़ाँचे धार्मिक विचारधाराओं से सिंचित थे। जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति था। अतः उस समय शिक्षक की भूमिका ईश्वर के रूप में थी। शिक्षक मोक्ष मार्ग का दाता तथा शिक्षा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग थी। समाज के बदलते स्वरूप के साथ-साथ उसकी संस्कृति भी बदलती जा रही है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रह गया है। प्राचीन काल में शिक्षक का स्थान सर्वोपरि था। अध्यापन करना उसका व्यवसाय नहीं अपितु जीवन का एक पवित्र लक्ष्य था। वह अपने विषय का विद्वान एवं भौतिक दृष्टि से निर्विध्न व्यक्ति था। में, सबसे उपेक्षित है शिक्षा, शिक्षा जिससे किसी राष्ट्र का निर्माण होता है, विकास होता है, हमारा देश जो कभी विश्व गुरू था सभी विद्याओं में अग्रणी, विश्व के अन्य देशों से विद्यार्थी हमारे विख्यात गुरूकुलों -तक्षशिक्षा, नालंदा, विक्रमशिला आदि में विद्यार्जन करने आते थे। विभिन्न विद्याओं में अग्रणी होने की बात तो विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं। यहीं कारण है कि हमारा देश सोने की चिड़िया था, इसका प्रमाण देने की कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। क्योंकि इतिहास ही सबसे बड़ा साक्षी है। जिसके अनुसार पहले मुस्लिमों ने, पुर्तगालियों, फ्रांसीसियों अन्य विदेशी आक्रांताओं ने किसी न किसी बहाने लूटा और अतं में अंग्रेजों ने तो यहीं आधिपत्य जमा लिया।

जिसके बाद उनको बाहर करने में हमारे देशभक्तों को अपने प्राणों से ही हाथ धोना पड़ा । शिक्षा के इस दयनीय दशा में पहुँचने के कारकों पर यदि विचार किया जाये तो - हमारी शिक्षा व्यवस्था

www.ignited.in

को प्रथम हानि तो मुस्लिम आक्रमणकारियों ने ही पहुंचाई, जब उन्होंने हमारे गुरूकुलों को लूटा, पुस्तकालयों को अग्नि के समर्पित कर दिया, परन्तु अंग्रेज वो तो और भी धूर्त थे, ने तो हमारी उत्कृश्ट शिक्षा की जड़ों पर प्रहार किया जिसका प्रमाण है लार्ड मैकाले का ये कथन जो उन्होंने फरवरी 1835 में ब्रिटिश संसद के सामने कहा था, कि "मैंने भारत के कोने-कोने की यात्रा की है और मुझे एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं दिखाई दिया, जो भिखारी हो या चोर हो। मैंने इस देश में ऐसी सम्पन्नता देखी, ऐसे ऊंचे नैतिक मूल्य देखे कि मुझे नहीं लगता कि जब तक हम इस देश की रीढ़ की हडडी न तोड़ दें, तब तक इस देश को जीत पायेंगे। इसकी रीढ़ की हडडी हैः इसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत। इसके लिए मेरा सुझाव है कि इस देश की प्रा चीन शिक्षा व्यवस्था को इसकी संस्कृति को बदल देना चाहिए। यदि भारतीय यह सोचने लग जाए कि हर वो वस्तु जो विदेशी और अंग्रेजी, उनकी अपनी वस्तु से अधिक श्रेश्ठ और महान है, तो उनका आत्म गौरव और मूल संस्कार नश्ट हो जायेंगे और तब वो वैसे बन पाएगे जैसा हम उन्हें बनाना चाहते है- एक सच्चा गुलाम राष्ट्र।

लार्ड मैकाले ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी शिक्षा नीति बनाई, जिसे आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार बनाया गया ताकि एक मानसिक रूप से गुलाम कोम तैयार किया जा सके, क्योंकि मानसिक गुलामी, शारीरिक गुलामी से बढ़कर होती है। मेकाले की शिक्षा नीति 1947 तक निर्बाध रूप से जारी रही, आजादी के पश्चात भी हमने इसमें कोई परिवर्तन करना उचित नहीं समझा और यू ही चलने दिया। अंग्रेज अपनी इस नीति में पूर्णतया सफल रहे और हमारे देशवासियों को उन्होंने ऐसे चश्मे पहिना दिये जिनके माध्यम से आज हमें पाश्चात्य ज्ञान, पाश्चात्य विचारधारा, वेशभूषा, रहन-सहन सभी कुछ सुन्दर, उपयोगी दिखाई देता है। आज तक हमने अपनी शिक्षा प्रणाली में कोई मूलभुत बदलाव करने पर कोई विचार नहीं किया। यदि हम बदलाव या परिवर्तन सरकारी स्तर से प्रारम्भ करें तो सरकारी प्रभार सर्वप्रथम शिक्षा विभाग प्राय जिन मंत्रियों को सौंपा जाता है, उनको शिक्षा का अ, ब, स, द भी पता नहीं होता, नीति निर्माण वही घिसी पिटी, या फिर विदेशों की नकल जो हमारी आवश्यकता या परिस्थितियों के अनुरूप बिल्कुल नहीं होती है। शिक्षक भी उसी वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक बन जाता है, तो उससे यह अपेक्षा करना ही व्यर्थ है, निजी शिक्षण संस्थानों की आज बाढ़ आयी हुई है जिसके कारण येन-केन प्रकारेण तो शिक्षा दी जा रही है। इस हालात में शिक्षकों से सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव की क्या आशा की जा सकती है।

सरकारी स्कूलों के शिक्षक सरकारी नौकर बनने को विवश है और निजी क्षेत्र में वहां के प्रबंधन के वेतन भोगी सेवक, जहाँ उनसे पूर्ण वेतन पर हस्ताक्षर करा कर आधा अधूरा वेतन दिया जाता है। विद्यालयों में प्रवेश में मोटी धनराशि, परीक्षाओं में नकल कराया जाना आदि सामान्य सी प्रक्रिया है। प्राथमिक स्तर पर ही यदि देखे तो उपलब्ध नेट या किताबी आंकड़ों के अनुसार आज भी देश में 9503 स्कूल बिना शिक्षक के हैं। 122355 से अधिक विद्यालय में पांच कक्षाओं पर एक शिक्षक है। लगभग 42 हजार स्कूल भवन विहीन है और एक लाख से अधिक स्कूलों में भवन के नाम पर एक कमरा है। सरकारी स्कूलों में अधिकाशं प्रशिक्षित अध्यापक मासिक वेतन लेते हैं और रिश्वत के माध्यम से अपनी नियुक्ति ऐसे स्थान पर करवाते हैं। जहां कभी अचानक होने वाले निरीक्षण में न पकड़े जाएँ। शिक्षकों की नियुक्ति में गड़बड़ी, रिश्वत खुले आम व्याप्त है, इन सब व्यवस्थाओं के चलते शिक्षकों को पूर्ण समर्पित तथा कर्तव्य निष्ठ मान कर चलना कपोल कल्पना ही हो सकती है। यही कारण है कि टयूशन, परीक्षाओं में धन लेकर पास करा देना आदि प्रवृत्तियाँ आम है।

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है और शिक्षक समाज को सही गति एवं दिशा देने में सहायक होता है।

"विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गनि हस्निीन।" "विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गनि हस्निीन।" "विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गनि हस्निीन।" "विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गनि हस्निीन।" गुनि चैव श्रपाके च पण्डिता समदर्शिनः।। गुनि चैव श्रपाके च पण्डिता समदर्शिनः।। गुनि चैव श्रपाके च पण्डिता समदर्शिनः।। गुनि चैव श्रपाके च पण्डिता समदर्शिनः।। इसका अर्थ है कि - ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता एवं चांडाल आदि को विद्वान लोग समान दृष्टि से देखते हैं।

इस वचन का अर्थ करते हुए यह कहना पड़ेगा कि विश्व कुटुंब की अवधारणा में समान अधिकार की कल्पना अमूर्त है। वैश्विक परिवार की कल्पना समानता के तत्व पर ही आधारित हैं। वस्तुतः समाज में अगर समता लानी है तो समरसता की आवश्यकता होती है। मनुष्य का मनोमिलन समरसता के बिना संभव नहीं है।

अर्थात शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि वह समाज के सभी वर्गों तथा समुदाय के लोगों के प्रति समान भावना रखें तथा सभी परिस्थिति में समाज के साथ एक रस हो जाए। समाज के बदलते नजरिये, बदलते जीवन मूल्यों का प्रभाव शिक्षा जगत पर पड़ा है आज का शिक्षा जगत भी एक व्यावसायिक तन्त्र का रूप लेता जा रहा है।

आधुनिकीकरण, पाश्चात्यीकरण, तकनीकीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण आदि का भी शिक्षक जगत एवं शिक्षक के स्वरूप तथा भूमिका पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस निमित्त आधुनिक

www.ignited.in

अध्यापकों की व्यावसायिक सोच एवं प्रतिबद्धता तथा उनकी सामाजिक समरसता आदि तथ्यों में भी बड़ा भारी परिवर्तन आया है।

डॉ. जितेन्द्र कुमार लोढ़ा ने अपने लेख 'सामाजिक समरसता की स्थापना में षांति शिक्षा की भूमिका व उत्तरदायित्व' में लिखा है कि समरसता सहित सहजीवन, पृथ्वी पर संस्कार युक्त-विकास की एक सर्वकालिक आवश्यकतापरक अवधारणा है, जिसका महत्व कभी भी समाप्त नहीं होगा। शिक्षा नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों, द्रष्टिकोण और कौशलों के पोशण पर बल देती है, जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामजस्य बिठाने के लिए आवश्यक है। सामाजिक-न्याय, समानता एवं सामाजिक समरसता की स्थापना शांति-शिक्षा के महत्वपूर्ण घटक है।[3] इसीलिए श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन का निर्देशन करते हुए कहा है कि "जो अपने आहार, विहार, में संयम रखता है और सभी स्थानों पर नियंत्रित रहता है, वही वास्तव में शांत कहलाता है। जब वह शांत है, तभी परिवार, समाज और विश्व को शांति दे सकता है। अशांत व्यक्ति का मन भटकता रहता है। उसके मन में दुविधा होती है और चंचल मन के साथ व्यक्ति किसी बात के लिए ठोस निर्णय नहीं ले पाता।

इसलिए शिक्षण न केवल आजीविका उपार्जन का अवसर प्रदान करता है बल्कि यह पुराने एवं नोबल व्यवसाय में शामिल किया जाता है। और शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है। परन्तु एक शिक्षक अपने बहुमूल्य कार्यों और जिम्मेदारियों का प्रदर्शन नहीं कर सकता, जबतक कि वह अपने व्यवसाय और व्यक्तित्व को अद्यतन नहीं कर लेता है। इसलिए ही अन्य व्यवसायों की तुलना में शिक्षण का सार्थक मूल्यांकन आवश्यक हो गया है। कुछ लोगों को शिक्षण व्यवसाय इसलिए भी अच्छा लगता है कि इसमें अन्य प्रकार की गतिविधयों पाठय सहगामी क्रियाएं की अधिक संभावना होती है। शिक्षण व्यवसाय ने राजस्थान में पिछले कई वर्शों में युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया है और बहुत से युवाओं ने शिक्षण को अपना व्यवसाय भी चुना है और आज एक शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आज भारत में निजी एवं सरकारी शिक्षण संस्थाओं की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि होती जा रही है। इससे यह सिद्ध होता है कि युवाओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में विकास तो हुआ है। शिक्षण व्यवसाय में नौकरियों की संभावना भी बढ़ी है और अध्यापकों के वेतन में भी वृद्धि हुई है। शिक्षण व्यवसाय में कम घंटों के कार्य में जॉब सुरक्षा सुनिश्चित होती है। इसके साथ ही प्राईवेट ट्यूशन और कोचिंग संस्थानों में अतिरिक्त पैसा भी कमाया जा सकता है।

व्यक्ति जिस स्थान पर कार्य करता है, वहां के अधिकारी कर्मचारी आदि में आपस में सौहार्दपूर्ण सामंजस्यता, समानता का माहौल नहीं हो तो वह उस व्यवसाय से संतुष्टि प्राप्त नहीं कर पाता है। किसी कार्य के सम्पादन से प्राप्त आय भी व्यवसाय रूचि की निर्धारक होती है। एक अध्यापक को विशेशज्ञ होना अति आवश्यक है वह चाहे- नर्सरी विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, मिडिल विद्यालय, उच्च विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, संस्थान या विशेष विद्यालय स्तर का हो, इससे उसकी जॉब सुरक्षा और कुशलता में भी वृद्धि होती है, और उसकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता के विकास की संभावना भी बढ़ जाती है। एक अध्यापक के लिए मूलभुत विशेशताओं का होना आवश्यक है जैसे धैर्य, दृढ़ निश्चयी, विद्यार्थियों के अनुसार ग्रहणशील, समरस भाव और खुश मिजाज हो। जिससे विद्यार्थी हमेेशा उसे आदर्श के रूप में देखे, न की उससे डरे।

कार्य या व्यवसाय रूचि का न हो तो जीवन जीने के लिए पर्याप्त संतुष्टि नहीं होगी। इसी प्रकार भविष्य में उस व्यवसाय के माध्यम से प्राप्त होने वाले उन्नति के अवसरों की न्यूनतम और अधिकतम मात्रा भी व्यावसायिक रूचि का निर्धारण करती है।वर्तमान परिस्थितियों में अध्यापक अपने व्यवसाय के प्रति स्थानांतरण, परिवार नियोजन, चुनाव तथा सर्वेक्षण आदि कर्तव्यों की अधिकता, तथा अधिक योग्यताधारी होते हुए भी निम्न कक्षाओं में अध्यापन करवाने की मजबूरी के कारण उनकी व्यवसायिक सोच तथा उनके कार्य स्तरों में बदलाव आया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिशद[5] ने 1998 में विशेष रूप में लिखा था कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की दक्षता और प्रतिबद्धता पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी इस तथ्य की संस्तुतियाँ की गई है कि शिक्षकों के लिए सार्थक एवं आवश्यकता आधारित कौशलों के विकास हेतु नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किए जाए, ताकि अध्यापकों की प्रभावशीलता में वृद्धि हो व्यावसायिक वचन बद्धता सुनश्चित हो एवं कार्य दबाव का स्तर न्यूनत हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसी तथ्य को दोहराया गया तथा कहा गया कि "शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की सार्थकता, उसकी विशय-वस्तु तथा ज्ञान के सतत विकास पर निर्भर करेगी।" दसवीं पंचवर्षीय योजना में भी इस बिन्दु को गम्भीरता से लिया गया है कि "शिक्षा के गुण" शिक्षा के गुणात्मक विकास के लिए शिक्षक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को उन्नत अद्यतन बनाना है। कार्यक्रमों को उन्नत अद्यतन बनाना है।" कार्यक्रमों को उन्नत अद्यतन बनाना है। कार्यक्रमों को उन्नत अद्यतन बनाना है।

शिक्षक छात्रों की ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक योग्यताओं का विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। जैसे-जैसे विद्यार्थी नवीन तथ्यों के बारे में सीखते जाते हैं, उनमें ज्ञान का विस्तार होता है, साथ ही समुचित भावनाओं, विचारों और अभिवृत्तियों को वे ग्रहण करते हैं जो समाज स्वीकृत और अपेक्षित हों। अभिव्यक्ति, क्षमता के साथ ही कौशलात्मक विकास भी उनमें होता है। शारीरिक विकास और मानसिक अनुभवजन्य प्रगति एवं स्तरोन्नयन दोनों सम्पन्न होने के कारण शिक्षण को एक विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में मान्यता दी जाती है। इस कार्य हेतु ऐ सफल शिक्षक की आवश्यकता होती है। सफल शिक्षण का कार्य एक सफल शिक्षक ही करा सकता है। जो अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति वाला हो और व्यावसायिक रूप से प्रतिबद्ध हो।

साहित्य की समीक्षा

कुलश्रेष्ठ एस. पी. (2012) ने "वर्तमान विद्यालयी परिदृश्य में अध्यापकों सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण के उभरते मूल्य स्वरूपों का के अध्ययन" विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि विद्यालय ग्रामीण व शहरी परिपेक्ष्य में वहां की सामुदायिकता से प्रभावित थे तथा अध्यापक के मूल्य व परम्पराएँ भी सामुदायिकता से प्रभावित पायी गई।

चिपलियोंकर, वी चिपलियोंकर, वी चिपलियोंकर, वी चिपलियोंकर, वी.वी वी वी वी (1980) ने निदेशालय शिक्षा विभाग महाराष्ट्र के तत्वाधान में ने "निदेशालय शिक्षा विभाग महाराष्ट्र के तत्वाधान में ने "निदेशालय शिक्षा विभाग महाराष्ट्र के तत्वाधान में ने "निदेशालय शिक्षा विभाग महाराष्ट्र के तत्वाधान में अध्यापकों की स्वयं आंकलन प्रक्रिया का अध्ययन" अध्यापकों की स्वयं आंकलन प्रक्रिया का अध्ययन" अध्यापकों की स्वयं आंकलन प्रक्रिया का अध्ययन" अध्यापकों की स्वयं आंकलन प्रक्रिया का अध्ययन" विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य कर अपने शोधकार्य में निम्नलिखत निष्कर्ष प्राप्त किया कि व्यावसायिक विकास की एक क्रियात्मक योजना को डिजायन कर पाया कि अधिकांशतः अध्यापक अपनी अन्वेषण क्षमता, शिक्षण विधियों की जानकारी तथा भविष्य के लिए उनकी अध्ययन प्रक्रिया, उनकी व्यावसायिक वचनबद्धताओं एवं व्यावसायिक विकास को सबलता प्रदान कर रही थी। जिन अध्यापकों में अध्ययन आदतों का अभाव था तथा अपने भविष्य को लेकर संतुष्ट स्वरूप में पाए गए, उनका व्यावसायिक विकास स्तर निम्न था।

पी. वर्मा. (2013) ने पंजाब विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के तत्वाधान में पी-एच.डी. उपाधि हेतु बुद्धिमत्ता के अधिगम के तीन स्तरों- दुचिन्ता कार्य कठिनाई तथा पुनर्बलन के युग्म के साथ परस्पर संबंध के प्रभाव का अध्ययन" विषय को चुन कर निष्कर्ष प्राप्त किया कि उच्च व मध्यम स्तर में दुश्चिन्ता एवं बुद्धिमत्ता विषयों के अधिगम के लिए सार्थक थी तथा निम्न स्तर का परिणाम सार्थक नहीं था। विषयों में उच्च एवं निम्न उपलब्धि का दुश्चिन्ता एवं बुद्धिमत्ता के साथ सार्थक सम्बन्ध पाया गया, वहीं उच्च व मध्यम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं देखा गया, इसी प्रकार निम्न स्तर पर दुश्चिन्ता अधिगम को नुकसान पहुंचाती है। साथ ही दुश्चिन्ता, बुद्धिमत्ता एवं पुनर्बलन की अन्तः क्रिया में पाया कि दुश्चिन्ता एवं पुनर्बलन का परिणाम केव ल निम्न स्तर पर बुद्धिमत्तापूर्व क थे।

एन. के. चौधरी (2014) ने पंजाब विश्वविद्यालय के तत्वाधान में "निष्पत्ति अभिप्रेरणा का दुचिन्ता, बुद्धि, लिंग सामाजिक वर्ग और व्यावसायिकता के संबंधों का अध्ययन" करते हुये पाया कि दुश्चिन्ता और निष्पत्ति अभिप्रेर णा के बीच नकारात्मक सह-संबंध है। छात्र-छात्राओं के उच्च निष्पत्ति तथा दुश्चिन्ता और व्यावसायिक आकांक्षा एक समान है। उक्त अध्ययन में अनुसंधान कत्र्ता ने 'सारसन का सामान्य चिन्ता परीक्षण' उपकरण के रूप में प्रयोग 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग कर दत्त संकलन कर, मध्यमान प्रमाप विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं सह-सम्बन्ध के माध्यम से विश्लेषण कर शोध कार्य को सार्थक स्वरूप दिया।

प्रहलाद, एन. एन. (2015) ने "जूनियर कॉलेज के विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर, मानसिक योग्यता एवं व्यक्तित्व समायोजन का उनके नैतिक निर्णय के साथ सम्बन्ध" विषय पर अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि भारत वर्ष के कनिष्ठ महाविद्यालयी छात्रों और संयुक्त राष्ट्र संघ के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के नैतिक निर्णय में सार्थक अन्तर है। पारिभाषिक परीक्षणों तथा व्यक्तित्व परिक्षणों के मध्य सकारात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया। उसी तरह विज्ञान एवं कला वर्ग विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के छात्रों में सार्थक अन्तर पाया गया। छात्र एवं छात्राओं में भी यह सार्थक अन्तर विद्यमान था किन्त आयु की विविधता के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं ज्ञात किया जा सका और न ही कनिष्ठ महाविद्यालय वर्ग के अध्ययनरत छात्रों के नैतिक निर्णय की जानकारी प्राप्त हो सकी।

दत्त, आर. (2016) ने "प्रारम्भिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सामाजिक समरसता एवं छात्रों तथा अध्यापकों की अभिवृत्ति एवं समायोजन का इसके साथ सम्बन्ध का अध्ययन" विशय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने निष्कर्ष में पाया कि सामाजिक तत्वों के मध्य उच्च सहसम्बन्धता है जैसे कि तथा सम्पूर्ण प्राप्तांकों में सामाजिक

www.ignited.in

प्राप्तांकों ने सहयोग किया। सामाजिक समरसता ने CWG पर प्राप्तांक लिए तथा छात्र-विद्यार्थी सामंजस्यता के प्रा प्तांकों में नकारात्मक सहसम्बन्धता थी जो कि मुख्य थी। सामाजिक समरसता के पर प्राप्तांक है तथा हर विद्यार्थी के अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के नकारात्मक सहसम्बन्ध थे। अध्यापन तथा अध्यापकों के प्रति समायोजन के प्राप्तांकों का माध्य का अंतर संस्थाओं के समूह में उच्च एवं निम्न सामाजिक समरसता के लिए महत्त्वपूर्ण था। शिष्यों एवं संस् थानों के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के माध्य का अंतर संस्थानों के समूह में उच्च एवं निम्न सामाजिक समरसता के लिए महत्त्वपूर्ण था। बालकों के व्यवहार व संस्थाओं के प्रति मध्यमान के मानों का अन्तर सामाजिक समरसता के उच्च व निम्न वर्गों के प्रति सार्थक मान है। महिला कॉलेजों में सामाजिक समरसता व समायोजन के प्रति अधिकांश सार्थक सहसम्बन्ध रहा।

सोम, पी. (2015) ने "अध्यापकों के व्यक्तित्व तरीकों, उनकी शिक्षण व्यवसाय तथा उससे सम्बन्धित क्षेत्रों की तरफ अभिवृति का अध्ययन" विषय पर पी-एच. डी. स्तर पर अध्ययन किया और अपने अध्ययन में भोपाल शहर के 1040 महिला एवं पुरूष शिक्षकों को शामिल किया। इन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि - माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक न तो बहिर्मुखी थे, और न ही अन्तर्मुखी। पुरूष शिक्षक महिला शिक्षकों की तुलना मे अधिक चिन्तनशील, सावधान, मानसिक रूप से स्वस्थ पाए गए। शिष्यों की तरफ अध्यापकों का नरम रूख पाया। अध्यापन अभिवृत्ति तथा अध्यापन व्यवसाय के साथ धैर्य, सावधानी, विराग जिम्मेदारी जैसे तत्वों का महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध पाया गया।8

सिंह, ए. आर. (2017) ने दिल्ली व हरियाणा के विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा, बुद्धि, गणित में उपलब्धि, बहिर्मुखता व अन्तर्मुखता आदि चरों के बीच सम्बन्धों का अध्ययन" शीर्षक पर पी-एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होंने शोध निष्कर्ष में पाया कि दिल्ली व हरियाणा के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक एवं अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दिल्ली व हरियाणा के समान सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर से सम्बन्धित विद्यालयों के बालकों के गणित की उपलब्धियों में आवश्यक अन्तर पाया गया, व बालक की शैक्षिक उपलब्धियों को अभिप्रे णा से प्रभावित पाया गया।

एस. मल्होत्रा 2019 ने "हाई स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर व्यक्तित्व समायोजन, दुचिन्ता व शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य संबंध" ज्ञात किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष में छात्र एवं छात्राओं के बीच दुश्चिन्ताओं के स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में विपरीत संबंध पाया गया। छात्र-छात्राओं के परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति व शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह-संबंध पाया गया। सामान्यतः छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में दुश्चिन्ता का स्तर अधिक प्राप्त हुआ।

मितल, डॉ. अन्नपूर्णा (2018) ने 'शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार तथा उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं का अध्ययन' विषय पर अपना शोधकार्य किया जिसमें पाया गया कि कक्षा शिक्षण सम्बन्धी कुछ प्रचलित भ्रान्तियों का भी निवारण हो जाता है। अंग्रेजी माध्यम की कक्षाओं में शिक्षा व्यवहार वस्तुत: शिक्षणीय प्रभाव की कसौटी में खरा नहीं उतरता। विज्ञान का शिक्षण भी अन्य विषयों की अपेक्षाकृत कम प्रभावी हो रहा है। महिला शिक्षक पुरूषों की अपेक्षा कम प्रभावी ढ़ंग अपनाती प्रतीत हो रही हैं।[9]

खान, एस0 (2015) ने सामान्य शिक्षा शिक्षकों तथा शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं पर एक तुलनात्मक अध्ययन" विशय पर शोधकार्य किया, जिसके निष्कर्श निम्न थे - समस्त शारीरिक शिक्षा शिक्षक सामान्य शिक्षकों की तुलना में सुसमायोजित, सुसामाजिक, गृह-सुसमायोजित तथा स्वास्थ्य में अच्छे एवं व्यावसायिक रूप से अधिक अच्छे पाए गए। 40 प्रतिशत से अधिक शिक्षक अपने नार्मल सामान्य शारीरिक सन्तुलन को नहीं रख पाए। शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की तरफ ही सामान्य शिक्षकों द्वारा भी सामान्य शारीरिक संतुलन बनाकर रखने की उपेक्षा की गई।

गीतानाथ, पी. एस. (2014) ने "नैतिक निर्णय का निचित चरों बुद्धिमता, अर्थिक, सामाजिक स्तर, आयुक्षेत्र तथा लिंग के साथ सम्बन्ध का अध्ययन" शीर्षक पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया। इन्होंने निम्न निष्कर्ष पाये - विभिन्न विद्यालयों की विभिन्न कक्षाओं में किये गये अध्ययनों नैतिक निर्णय के लिए के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न आयु के विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा, शहरी विद्यार्थियों ने उच्च नैतिक निर्णय स्तर का प्रदर्शन किया। जबकि लड़के व लड़कियों के नैतिक में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। इसी प्रकार भिन्न बौद्धिक क्षमता के विद्यार्थियों में नैतिक निर्णय में भी भिन्नता पाई गई। यह अन्तर आर्थिक व सामाजिक स्तर पर भी पाया गया।[10]

मोरे, आरती (2014) ने "माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के व्यक्तित्व तथा अभिवृत्तियों का उनके शिक्षण तथा उसकी प्रभाव शीलता के सम्बन्ध में अध्ययन" किया। इन्होंने अपने अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किया- 16 व्यक्तित्व कारकों में से केव ल 6 कारक ऐसे पाए गए जो उन अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता से सकारात्मक सह-सम्बन्धित थे। इनमें से बुद्धिमता, व्यक्तित्व गुण सबसे महत्वपूर्ण पाए गए।11

उद्देश्य

1. शहरी एवं ग्रामीण अध्यापक-अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. सरकारी-गैर-सरकारी अध्यापक-अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. अध्यापक-अध्यापिकाओं के अध्यापन कौशल का मनो-सामाजिक दशाओं यथा- अध्यापन अभिवृत्ति, संज्ञानात्मक क्षमता, व्यक्तित्व समायोजन एवं सामाजिक पर्यावरण के साथ पारस्परिक सहसम्बन्ध का अध्ययन करना

परिकल्पना

1. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के स्थायी अध्यापकों एवं अस्थायी अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

प्रस्तुत उपकरण

इस अध्ययन में डॉ. एस. पी. आहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति परिसूची (टी. ए.आई.) प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत्तों के विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं-

तालिका 1.1 सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर का सारांश।

विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी. मूल्य	सार्थकता स्तर (0.05 स्तर)
सरकारी विद्यालय के अध्यापक	50	250.74	28.84	1.91	सार्थक नहीं
निजी विद्यालय के अध्यापक	50	238.58	33.77		

df-98

निष्कर्ष

सरकारी-गैर-सरकारी अध्यापक-अध्यापिकाओं में अध्यापन कौशल सामान्य स्तर का पाया गया, अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है। शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के अध्यापन कौशल में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमानों के आधार पर शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों के मध्यमान कम है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों की तुलना में शहरी क्षेत्र के अध्यापकों में अध्यापन का कौशल उच्च स्तर का होता है। इसी प्रकार शहरी एवं ग्रामीण अध्यापिकाओं के अध्यापन कौशल में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमानों के आधार पर शहरी क्षेत्र की अध्यापिकाओं की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं के मध्यमान कम है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं की तुलना में शहरी क्षेत्र की अध्यापिकाओं में अध्यापन का कौशल उच्च स्तर का होता है। इसी प्रकार शहरी अध्यापक एवं शहरी अध्यापिकाओं के अध्यापन कौशल में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमानों के आधार पर शहरी अध्यापकों की अपेक्षा शहरी अध्यापिकाओं के मध्यमान कम है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शहरी अध्यापिकाओं की तुलना में शहरी अध्यापकों मे अध्यापन का कौशल उच्च स्तर का होता है।

सन्दर्भ

1. कुलश्रेष्ठ एस. पी. (2012) "स्वतन्त्र भारत में शिक्षा का विकास' (2000)आर्य बुक डिपो, 30, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली, पृ.सं. 252
2. पी. वर्मा. (2013) "अध्यापक-प्रशिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर चिंता के प्रभाव का अध्ययन", (1998) पृ.सं. 44

3. एन. के. चौधरी (2014) “शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार” (2005) शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326-327

4. प्रहलाद, एन. एन. (2015) “प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति’, (1968) नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी,, पृ.-155

5. दत्त, आर. (2016) “राष्ट्रीय चेतना के संदेश वाहक: शिक्षक, शिविरा पत्रिका, 2007, पृ.सं. 12

6. सोम, पी0 (2015) “रिसर्च पब्लिकेशन्स” (2000) नई दिल्ली, 2000 पृ. 96

7. सिंह, ए. आर. (2017): अनुसंधान विधियाँ”(1998) द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या-23

8. मितल, डा. अन्नपूर्णा (2018) “अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी”(2008) न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या-2

9. खान, एस0 (2015) “उच्च शिक्षा मनोविज्ञान” (1998), विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ.सं. 31

10. गीतानाथ, पी. एस. (2014) “शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र” (1990) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या-51

11. मोरे, आरती (2014) “‘भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ” (2007) विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

12. पाण्डेय रामशकलः “शिक्षा मनोविज्ञान” (2007) विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या-133-136

Corresponding Author

Vinita Kumari*

Research Scholar, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan